# धर्म-परिवर्तनके दांवपेंचोंसे सावधान !

## अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण सूत्रे *' चिह्नसे दर्शाए हैं।)


१. हिंदुओंको धर्मांतरित करनेमें ईसाई एवं मुसलमानोंका उद्देश्य ५
२. हिंदुओंको ईसाई बनानेके दांवपेंच ७
- प्रलोभन (लालच) देना - ईसाइयोंके तथाकथित सेवाकार्य ११
- भोलेभाले हिंदुओंको ठगना - हिंदू धर्मियोंसमान आचरण करना १९
- हिंदू धर्मकी आलोचना करना - बलप्रयोग २८
३. हिंदुओंको मुसलमान बनानेके लिए चलाए जा रहे दांवपेंच ३४
- बलप्रयोग, बंदी बनाना एवं आतंकवादियोंसे सहायता ३९
४. धर्म-परिवर्तनके संकटका विचारपूर्वक प्रतिकार करें ! ४०
५. हिंदुओंका धर्मांतरण करनेवाले अहिंदुओंको वैध मार्गसे रोकें ! ४२
६. हिंदू समाजको आवाहन ४३
७. हिंदुओ, अद्वितीय हिंदू धर्मके प्रचारक बनिए ! ४५
८. हिंदू राष्ट्रमें अहिंदुओंके लिए धर्मप्रचार प्रतिबंधित होगा ! ४७


.

# मनोगत

विगत कुछ शतकोंसे अहिंदुओंने अपनी जनसंख्या बढानेकी महत्त्वाकांक्षा के चलते विविध मार्गोंसे हिंदुओंका धर्म-परिवर्तन किया है । इसके लिए उन्होंने छल, बल, कपटसे लेकर प्रलोभन, धोखाधडीतक विविध असंवैधानिक मार्ग अपनाए हैं । इसमें कहीं भी वैचारिक मंथन नहीं था । अनेक मिशनरियोंने ही यह मान्य किया है कि 'ईसा मसीह तथा उनका पंथ, मनको भानेके कारण ईसाई बननेवालोंकी संख्या नगण्य है ।' आज भी, अहिंदू व्यापक स्तरपर हिंदुओंका धर्म-परिवर्तन कर रहे हैं । धर्मांध मुसलमान आतंकवादके माध्यमसे हिंदू धर्मपर सीधा आक्रमण करते हैं, जबकि ईसाई मिशनरियां पूतनाकी भांति छिपकर आक्रमण करती हैं । धर्मांतरित व्यक्ति अपने समाजके सहस्त्रो वर्षकी सांस्कृतिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक परंपराओंसे क्षणभर में दूर हो जाता है । इसे ध्यानमें रखते हुए, हिंदू धर्म एवं हिंदुस्थानमें जीवित रहने हेतु अहिंदुओंद्वारा अपनाए जानेवाले धर्म-परिवर्तनके विविध दांवपेचोंकी विस्तृत जानकारी इस ग्रंथमें दी गई है । उसीके साथ 'धर्म-परिवर्तन कैसे रोकें, इसके विरुद्ध हिंदुओंको कौन-सी वैधानिक भूमिका अपनानी चाहिए तथा क्या कार्यवाही करनी चाहिए', इसका विवेचन भी इस ग्रंथमें है ।

अब पश्चिमी राष्ट्रोंके ईसाई अपने पंथका त्याग करने लगे हैं; परंतु अन्य पर्यायोंके अभावमें वे किंकर्तव्यविमूढ होकर मायामें अटक गए हैं । दूसरी ओर, अरब राष्ट्रोंमें मुसलमान एक-दूसरेके प्राण लेनेपर उतारू हैं । इससे उनका जीवन असुरक्षा एवं आक्रामकतासे भरा है । सत्य तो यह है कि अहिंदुओंकी इस धार्मिक वास्तविकताका भान रखकर भारतके हिंदुओंको अत्यंत अभिमानके साथ अपने धर्मका पालन करना चाहिए । किंतु, भारतीय हिंदुओंमें धर्मशिक्षाका अभाव है, इसलिए प्रतिवर्ष लाखों हिंदू अहिंदुओंकी मायावी बातोंके भुलावेमें आकर धर्मांतरित होते जा रहे हैं । यह सब कहीं तो रुकना चाहिए ।

हिंदुओंकी भावी पीढी अहिंदू न बने, इस हेतु यह ग्रंथ पढकर हिंदू अपने धर्म पर हो रहा धर्मांतरणरूपी आक्रमण परास्त कर पाएं, यही ईश्वरचरणोंमें प्रार्थना !